संगतकार

कविता की व्याख्या

(1)

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाश सुंदर कमज़ोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरश में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से
गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को सँभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था

शब्दार्थ: संगतकार = मुख्य गायक के साथ गायन करने वाला या कोई वाद्य बजाने वाला कलाकार, सहयोगी, गरश = उँची गंभीर आवाज़, अंतरा = स्थायी या टेक को छोड़कर गीत का चरण, जटिल = कठिन, तान = संगीत में स्वर का विस्तार, सरगम = संगीत के सात स्वर, अनहद = योग अथवा साधना की आनंददायक स्थिति, स्थायी = गीत का वह चरण, जो बार-बार गाया जाता है, टेक।, नौसिखिया = जिसने अभी सीखना आरंभ किया हो, शिष्य = चेला, सीखने वाला।

व्याख्या: कवि कहते हैं कि मुख्य गायक के साथ संगत करने वाले यानी गाने वाले या बजाने वाले कुछ लोग होते हैं, उन्हें संगतकार कहते हैं। मुख्य या प्रधान गायक के गंभीर स्वर के साथ अपनी कमज़ोर किंतु मधुर आवाज़ से जब कोई गाता है तब अधिकांश स्थलों पर वह गायक का छोटा भाई, चेला या कोई रिश्तेदार होता है। कवि कहते हैं कि पुराने जमाने से ही ऐसी परंपरा चलती आ रही है कि जब मुख्य गायक गीत गाते हुए सुरों की मोहक दुनिया में खो जाता है, भाव-विभोर हो जाता है अथवा अंतरे की सुर-तान की बारीकियों में उलझता चला जाता है और उसी में रम जाता है तब संगतकार ही स्थायी या टेक को बार-बार गाकर समाँ बाँध रखता है। यहाँ कवि यह कहना चाहते हैं कि कभी-कभी मुख्य गायक अपनी सरगम से उत्पन्न होने वाले आनंद से भी परे किसी दिव्य लोक में स्वर्गिक आनंद की अनुभूति करने लगता है तब उसे बाह्य जगत की सुध नहीं रहती। योग-साधना की ऐसी आनंददायिनी स्थिति में श्रोताओं को संगीत से जोड़े रखने का काम संगतकार ही करता है। कवि यहाँ एक अनुपम उदाहरण देते हैं कि ऐसा लगता है कि किसी के चले जाने के बाद जैसे कोई उसका छूटा हुआ सामान सँजोकर रख रहा हो। कवि आगे यह भी कहते हैं कि संगतकार अपनी टेक से मुख्य गायक को यह याद दिलाता है कि कभी वह भी

नया-नया सीखने वाला था, आज जैसा महान गायक न था। इस प्रकार वह अपनी आवाश के जादू से उसे उसके बचपन की याद दिलाता है।

विशेष-

1. प्रस्तुत काव्यांश सरल-सुंदर खड़ी बोली में रचित है।
2. सामान्य बोलचाल की भाषा में कवि ने भावों का घट भर दिया है। संगीत से संबंधित तान, स्थायी, सरगम आदि शब्द भावों की यथोचित अभिव्यक्ति करते हैं।
3. 'जटिल तानों के जंगल' से कवि का उद्देश्य संगीत की अतल गहराइयों से है।
4. प्रस्तुत कविता मुक्तक शैली में अतुकांत रचना है।
5. कवि ने मुख्य गायक के साथ-साथ उसके सहयोगियों की महत्ता को भी स्वीकार किया है।

(2)

तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाश से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढाँढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाश में जो एक हिचक साफ सुनाई देती है
या अपने स्वर को उँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

शब्दार्थ: तारसप्तक = सप्तक का अर्थ है सात स्वरों का समूह, लेकिन ध्वनि या आवाज़ की उँचाई और निचाई के आधार पर संगीत में तीन तरह के सप्तक माने गए हैं। साधारण या सामान्य ध्वनि को 'मध्य सप्तक' कहते हैं। मध्य सप्तक से उपर की ध्वनि को 'तार सप्तक' कहते है यानी कापफी उँची आवाश। और मध्य सप्तक से नीची आवाश को 'मंद्र सप्तक' कहते हैं, उत्साह अस्त होना = उत्साह खत्म होना, राख जैसा कुछ गिरता हुआ = बुझता हुआ स्वर , बेजा न आवाज़ , ढाँढ़स बँधाता = तसल्ली देता, सांत्वना देता, हिचक = झिझक, विफलता = पराजय, हार, मनुष्यता = मानवता।

व्याख्या: उपर्युक्त पंक्तियों में कवि कहना चाहते हैं कि जब तारसप्तक में यानी बहुत उँफची आवाश में गाते-गाते मुख्य गायक या गायिका का स्वर उखड़ने लगता है और गला बैठने लगता है, तब संगतकार अपनी कोमल आवाश का सहारा देकर उसे उस निराश-हताश अवस्था से उबारने का प्रयास करता है। लगातार उँफचे स्वर में गाते रहने से गायक की साँस जैसे उखड़ने लगती

है, तब संगतकार अपनी टेक के द्वारा उसे सँभाल लेता है और उसे यह अनुभव कराता है कि इस अनुष्ठान में वह अकेला नहीं है। कवि यहाँ गायक की आवाश से 'राख जैसा कुछ गिरता हुआ' कहकर यह स्पष्ट करना चाह रहे हैं कि जब उसका स्वर बुझने-सा लगता है और पहले वाला उत्साह शेष नहीं रह जाता तब संगतकार अपनी कोमल आवाश की सहायता से उसे उबार लेता है। संगतकार तब उसे मानो सांत्वना देता है कि निराश मत हो, हम सब तुम्हारे साथ हैं और पहले की भाँति पूरे दम-खम के साथ दोबारा फिर से गाया जा सकता है।
यहाँ कवि एक बात की ओर संकेत करते हैं कि उस समय संगतकार की आवाश में एक प्रकार की झिझक साफ अनुभव की जा सकती है। मानो वह संकोच के साथ गा रहा है ताकि उसका स्वर मुख्य गायक या गायिका के स्वर से उपर न पहुँच जाए, वह हमेशा अपनी आवाश को नीची रखना चाहता है। कवि कहते हैं कि उसके ऐसा करने का मतलब उसकी असफलता या कमज़ोरी नहीं बल्कि वह तो मुख्य गायक का मान बनाए रखने के लिए ही ऐसा करता है। इसी को कवि ने उसकी मानवता और महानता बताया है।

विशेष-

1. मुक्त छंद और अतुकांत शब्दों में कवि ने रचना की है।
2. इसमें सरल-सहज खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है, जिसमें प्रतीकात्मक शब्दों, जैसेμप्रेरणा साथ छोड़ना, उत्साह अस्त होना आदि का सुंदर समुचित प्रयोग हुआ है।
3. कवि ने अति साधारण संगतकार के महत्वपूर्ण योगदान की भरपूर सराहना की है।
4. भावानुकूल प्रतीकों का उपयोग हुआ है।

कविता का सार

इस कविता में कवि ने गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की महत्ता का स्पष्ट किया है। कवि कहते हैं कि मुख्य गायक के गंभीर आवाज़ का साथ संगतकार अपनी कमजोर किन्तु मधुर आवाज़ से देता है। अधिकांशत ये मुख्य गायक का छोटा भाई, चेला या कोई रिश्तेदार होता है जो की शुरू से ही उसके साथ आवाज़ मिलाता आ रहा है। जब मुख्य गायक गायन करते हुए सुरों की मोहक दुनिया में खो जाता है, उसी में रम जाता है तब संगतकार ही स्थायी इस प्रकार गाकर समां बांधे रखता है जैसे वह कोई छूटा हुआ सामान सँजोकर रख रहा हो। वह अपनी टेक से गायक को यह उन दिनों की याद दिलाता है जब उसने सीखना शुरू किया था।

कवि कहते हैं बहुत ऊँची आवाज़ में जब मुख्य गायक का स्वर उखड़ने लगता है और गला बैठने लगता है तब संगतकार अपनी कोमल आवाज़ का सहारा देकर उसे इस अवस्था से उबारने का प्रयास करता है। वह मुख्य गायक को स्थायी गाकर हिम्मत देता है की वह इस गायन जैसे अनुष्ठान में अकेला नहीं है। वह पुनः उन पंक्तियों को गाकर मुख्य गायक के बुझते हुए स्वर को सहयोग प्रदान करता है। इस समय उसके आवाज़ में एक झिझक

से भी होती है की कहीं उसका स्वर मुख्य गायक के स्वर से ऊपर ना पहुँच जाए। ऐसा करने का मतलब यह नही है की उसके आवाज़ में कमजोरी है बल्कि वह आवाज़ नीची रखकर मुख्या गायक को सम्मान देता है। इसे कवि ने महानता बताया है।

कवि परिचय

मंगलेश डबराल

इनका जन्म सन 1948 में टिहरी गढ़वाल, उत्तरांचल के काफलपानी गाँव में हुआ और शिक्षा देहरादून में। दिल्ली आकर हिंदी पेट्रियट, प्रतिपक्ष और आसपास में काम करने के बाद ये पूर्वग्रह सहायक संपादक के रूप में जुड़े। इलाहबाद और लखनऊ से प्रकाशित अमृत प्रभात में भी कुछ दिन नौकरी की, बाद में सन 1983 में जनसत्ता अखबार में साहित्य संपादक का पद संभाला। कुछ समय सहारा समय में संपादक रहने के बाद आजकल नेशनल बुक ट्रस्ट से जुड़े हैं।

प्रमुख कार्य

कविता संग्रह - पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं और आवाज़ भी एक जगह है।
पुरस्कार - साहित्य अकादमी पुरस्कार, पहल सम्मान।

कठिन शब्दों के अर्थ

1. संगतकार - मुख्य गायक के साथ गायन करने वाला या वाद्य बजाने वाला कलाकार।
2. गरज - उँची गंभीर आवाज़
3. अंतरा - स्थायी या टेक को को छोड़कर गीत का चरण
4. जटिल - कठिन
5. तान - संगीत में स्वर का विस्तार
6. सरगम - संगीत के सात स्वर
7. अनहद - योग अथवा साधन की आनन्दायक स्थिति
8. स्थायी - गीत का वह चरण जो बार-बार गाय जाता है, टेक
9. नौसिखिया - जिसने अभी सीखना आरम्भ किया हो।